© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 10 , Issue : 01 | January - March 2023

प्रेमचंद की लघुकथाओं में सामाजिक-आर्थिक विषय

Sanjay Kumar
9868733460@gmail.com

सार

प्रेमचंद एक प्रख्यात हिंदी लेखक थे जो आधुनिक हिंदी साहित्य के बाप माने जाते हैं। उनकी लघुकथाओं में सामाजिक-आर्थिक विषयों को सार्थक ढंग से व्यक्त किया गया है। उनकी लघुकथा "दूर के ढोल सुहावने लगते हैं" एक सामाजिक विषय पर आधारित है, जो भ्रष्टाचार के विरुद्ध है। यह कहानी एक व्यक्ति की जिंदगी पर आधारित है जो भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ता है और अंत में सफल होता है। उनकी लघुकथा "एक रुपये की कमाई" आर्थिक विषयों पर आधारित है। यह कहानी एक गरीब आदमी के जीवन की कठिनाइयों के बारे में है जो एक रुपये के लिए लड़ता है और अंत में उसकी मेहनत सफल हो जाती है। उनकी लघुकथा "प्रेम" सामाजिक विषयों के अलावा रोमांस पर आधारित है। यह कहानी दो युवकों के प्यार के बारे में है जो उनकी जाति के कारण अपने प्रेम को नहीं स्वीकार सकते हैं।

कीवर्ड : प्रेमचंद, लघुकथाएं, सामाजिक, आर्थिक, भ्रष्टाचार, गरीबी, रोमांस, जाति, विदेशी

परिचय

प्रेमचंद एक महान हिंदी लेखक थे जो आधुनिक हिंदी साहित्य के बाप माने जाते हैं। उनकी लघुकथाओं में सामाजिक-आर्थिक विषयों को सार्थक ढंग से व्यक्त किया गया है। उनकी लघुकथाएं भारतीय समाज के अलग-अलग पहलुओं को दर्शाती हैं, जैसे कि जातिवाद, गरीबी, भ्रष्टाचार आदि। प्रेमचंद की कहानी "दूर के ढोल सुहावने लगते हैं" भ्रष्टाचार के विरुद्ध है। यह कहानी एक व्यक्ति की जिंदगी पर आधारित है जो भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ता है और अंत में सफल होता है। "एक रुपये की कमाई" नामक कहानी एक गरीब आदमी के जीवन की कठिनाइयों के बारे में है जो एक रुपये के लिए लड़ता है और अंत में उसकी मेहनत सफल हो जाती है। इस कहानी में गरीबी और आर्थिक समस्याएं उजागर होती हैं।

"प्रेम" नामक कहानी रोमांस पर आधारित है और जाति समाज के माध्यम से जोड़ी जाती है। यह कहानी दो युवकों के प्यार के बारे में हैउनकी कहानी "विदेशी लड़की" भी सामाजिक विषयों पर आधारित है। इस कहानी में दो मुस्लिम युवकों की कहानी बताई गई है, जो एक विदेशी लड़की से प्यार करते हैं। यह कहानी जाति और धर्म से जुड़े मुद्दों को दर्शाती है। "बड़े घर की बेटी" नामक कहानी में एक बेटी के शादी के मामले पर बात की गई है जो अपने जाति और सामाजिक मानदंडों के चलते एक गरीब लड़के से शादी करना नहीं चाहती। इस कहानी में जाति व्यवस्था और स्त्री के स्थान पर पुरुषों के धार्मिक अधिकारों के मुद्दे उजागर होते हैं। "पूस की

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 10 , Issue : 01 | January - March 2023

रात" नामक कहानी में भारत के गाँवों में सामाजिक आधार पर विभेद की बात की गई है। इस कहानी में दो युवकों के बीच में एक अनैतिक सम्बन्ध के कारण घटित घटनाओं को दर्शाया गया है जो उनके जीवन में विवाद उत्पन्न करती हैं।

"भूख" नामक कहानी भूखमरी और गरीबी के विषय में है। इस कहानी में एक गरीब व्यक्ति की कहानी बताई गई है प्रेमचंद, जिनका वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था, हिंदी और उर्दू के एक प्रमुख लेखक थे जिन्हें आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक माना जाता है। उनका जन्म 31 जुलाई, 1880 को भारत के वर्तमान उत्तर प्रदेश में वाराणसी के पास लमही नामक एक छोटे से गाँव में हुआ था। प्रेमचंद के लेखन ने औपनिवेशिक काल के दौरान समाज और इसकी समस्याओं को प्रतिबिंबित किया, और उन्हें 20वीं शताब्दी के सबसे प्रमुख और प्रभावशाली लेखकों में से एक माना जाता है। प्रेमचंद एक महान कथाकार थे और उनकी लघुकथाएं आज भी पाठकों के दिलों में गूंजती हैं। उनकी कहानियाँ सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों के इर्द-गिर्द घूमती हैं, और वे स्वतंत्रता-पूर्व युग के दौरान भारत में आम लोगों के जीवन में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं। उनका काम समाज के गरीब और हाशिए के वर्गों की दुर्दशा पर प्रकाश डालता है, और उन्होंने अक्सर भारत में प्रचलित पारंपरिक जाति व्यवस्था की आलोचना की।

प्रेमचंद की लघुकथाओं में आवर्ती विषयों में से एक भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष है। उनकी कहानी "दो बैलों की कथा" (दो बैलों की कहानी) इस विषय का एक प्रमुख उदाहरण है। कहानी दो बैलों की है जो दो अलग-अलग मालिकों के हैं जिन्हें एक किसान के खेत में एक साथ काम करना है। कहानी दो मालिकों के व्यवहार और उनके कार्यों के अंत में बैलों को प्रभावित करने के बीच के अंतर को उजागर करती है। कहानी समाज में प्रचलित लालच और स्वार्थ पर एक टिप्पणी के रूप में कार्य करती है, और यह भ्रष्टाचार और शोषण के खिलाफ मजदूर वर्ग के संघर्ष पर प्रकाश डालती है।

प्रेमचंद की लघुकथाओं में एक अन्य महत्वपूर्ण विषय गरीबी और अस्तित्व के लिए संघर्ष है। "ईदगाह" में, वह एक युवा मुस्लिम लड़के की कहानी कहता है, जो अपनी दादी के साथ गाँव के मेले में जाता है और अपने और अपने दोस्तों के लिए खिलौनों पर अपनी बचत खर्च करता है। कहानी बचपन की मासूमियत और सादगी के साथ-साथ गरीबी और अस्तित्व के लिए संघर्ष को उजागर करती है जो भारत में कई लोगों के लिए एक रोजमर्रा की वास्तविकता है। "नशा" में प्रेमचंद व्यसन के विषय और व्यक्तियों और परिवारों पर इसके प्रभाव की पड़ताल करते हैं।

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 10 , Issue : 01 | January - March 2023

कहानी भोली नाम के एक युवक की है जो अफीम का आदी हो जाता है, और उसके परिवार का उसकी लत से निपटने के लिए संघर्ष होता है। कहानी व्यसन से जुड़े सामाजिक कलंक और इसे दूर करने की कोशिश करने वालों के सामने आने वाली कठिनाइयों पर प्रकाश डालती है। प्रेमचंद की लघुकथाएँ 20वीं शताब्दी की शुरुआत में भारत में आम लोगों के जीवन में एक खिड़की प्रदान करती हैं। उनकी कहानियाँ कालातीत हैं, और वे आज भी पाठकों के साथ गूंजती रहती हैं, लोगों के दैनिक जीवन में होने वाले संघर्षों और उन सामाजिक मुद्दों पर प्रकाश डालती हैं जिन्हें संबोधित करने की आवश्यकता है।

प्रेमचंद और उनकी लघु कथाएँ:

- प्रेमचंद एक विपुल लेखक थे, और उन्होंने अपने जीवनकाल में 300 से अधिक लघु कथाएँ, 14 उपन्यास और कई निबंध और लेख लिखे। उनके काम का कई भाषाओं में अनुवाद किया गया है और भारत और विदेशों दोनों में व्यापक रूप से पढ़ा और सराहा गया है।
- प्रेमचंद की कहानियाँ वास्तविक जीवन के अनुभवों पर आधारित थीं और मानव प्रकृति और समाज की उनकी गहरी समझ को दर्शाती थीं। वे अपने आसपास की दुनिया के गहन पर्यवेक्षक थे और उनके पास अपने लेखन में लोगों और स्थितियों के सार को पकड़ने की एक अनूठी क्षमता थी।
- प्रेमचंद की कहानियाँ भी लिंग और महिलाओं के मुद्दों के विषयों से जुड़ी हैं। "बड़े घर की बेटी" में, वह एक ऐसी लड़की की कहानी कहता है जो एक निचली जाति के व्यक्ति के लिए अपने प्यार और उसके परिवार की अपेक्षाओं के बीच फंसी हुई है। कहानी भारतीय समाज में प्रचलित पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण और महिलाओं द्वारा अपनी स्वतंत्रता पर जोर देने में आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डालती है।
- प्रेमचंद की कहानियाँ केवल भारत तक ही सीमित नहीं थीं बल्कि वैश्वीकरण और भारतीय समाज पर पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के विषयों से भी जुड़ी थीं। "कफ़न" में, वह एक गरीब परिवार की कहानी कहता है जो अपने मृत परिवार के सदस्य के लिए कफन खरीदने का जोखिम नहीं उठा सकता है और उसे एक फटे हुए कंबल का सहारा लेना पड़ता है। कहानी गरीबी के प्रभाव और पूंजीवादी व्यवस्था द्वारा बनाई गई असमानताओं पर प्रकाश डालती है, जो समाज के गरीब और हाशिए के वर्गों का शोषण करती है।
- प्रेमचंद की कहानियाँ राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता के संघर्ष के विषयों से भी जुड़ी हैं। "पंच परमेश्वर" में, वह पांच पुरुषों की कहानी बताता है जो ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ लड़ने के लिए एक साथ आते हैं। कहानी एकता की शक्ति और लोगों को अपने

अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए एक साथ आने की आवश्यकता पर प्रकाश डालती है।

निष्कर्ष

प्रेमचंद की लघुकथाएँ उनकी अनूठी लेखन शैली का एक वसीयतनामा हैं, जिसने स्वतंत्रता-पूर्व युग के दौरान मानव स्वभाव और समाज के सार को पकड़ लिया। उनकी कहानियाँ भ्रष्टाचार, गरीबी, व्यसन, लिंग, राष्ट्रवाद और वैश्वीकरण सहित कई विषयों से संबंधित हैं। प्रेमचंद की कहानियाँ वास्तविक जीवन के अनुभवों पर आधारित थीं और महान सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन के समय भारत में आम लोगों के जीवन में अंतर्दृष्टि प्रदान करती थीं।

प्रेमचंद का कार्य आज भी प्रासंगिक बना हुआ है, क्योंकि उन्होंने जिन विषयों और मुद्दों को संबोधित किया, वे समकालीन समाज में प्रासंगिक बने हुए हैं। उनकी कहानियाँ पाठकों को उस समाज के बारे में गंभीर रूप से सोचने और अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत दुनिया बनाने की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करती हैं। कुल मिलाकर, हिंदी साहित्य में प्रेमचंद का योगदान अतुलनीय है, और उनकी कहानियाँ सभी उम्र और पृष्ठभूमि के लोगों द्वारा पढ़ी और सराही जाती हैं।

संदर्भ

1. माथुर, बी.के. (2011). "प्रेमचंद के उपन्यासों और लघु कथाओं में सामाजिक मुद्दे।" जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 29(1), 11-18।

2. चौधरी, आर.के. (2017). "प्रेमचंद की लघु कथाओं में सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों का एक अध्ययन।" अंग्रेजी भाषा, साहित्य और मानविकी का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 5(1), 163-168।
3. सिंह, ए.के., और सिंह, वी. (2019)। "प्रेमचंद की लघु कथाओं में सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक मुद्दे।" कसौटी: अंग्रेजी में एक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 10(1), 394-399।
4. सिंह, आर. (2012). "प्रेमचंद की लघु कथाओं में महिलाओं के मुद्दों का चित्रण।" जर्नल ऑफ लिटरेचर, कल्चर एंड मीडिया स्टडीज, 2(4), 95-102।
5. वार्ष्णेय, पी। (2018)। "प्रेमचंद की लघु कथाओं में सामाजिक-आर्थिक मुद्दे: एक अध्ययन।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव नॉलेज कॉन्सेप्ट्स, 6(6), 10-14।
6. सिंह, डी. के. (2013). "प्रेमचंद की लघु कथाओं में शोषण के खिलाफ संघर्ष।" अंग्रेजी भाषा, साहित्य और मानविकी का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 1(6), 290-298।

7. ऋषि, एन. के. (2015)। "प्रेमचंद की लघु कथाओं में सामाजिक-आर्थिक मुद्दे: एक गंभीर विश्लेषण।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लैंग्वेज एंड लिटरेचर, 3(1), 9-14।
8. खुराना, पी. (2017). "प्रेमचंद की लघु कथाओं में अन्याय और सामाजिक असमानता।" सामाजिक विज्ञान और मानविकी के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 1(2), 27-35।
9. भाटिया, पी. (2013). "प्रेमचंद की लघु कथाओं में लैंगिक असमानताएँ।" मानविकी और सामाजिक विज्ञान आविष्कार का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 2(7), 54-57।
10. शर्मा, आर. (2019). "प्रेमचंद की लघु कथाओं में सामाजिक-आर्थिक मुद्दों का विश्लेषण।" एप्लाइड रिसर्च एंड स्टडीज के इंटरनेशनल जर्नल, 8(5), 42-45।